बद्धजीव अपनी विकृत स्मृति अर्थात् श्रीकृष्ण से अपने नित्य सम्बन्ध को भूल जाने के कारण ही सदा भयभीत रहता है। श्रीमद्भागवत का कथन है: **भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादीशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः** कृष्णभावनामृत भय-मुक्ति का एकमात्र आधार है। अतः कृष्णभावनाभावित भक्त योग का पूर्ण अभ्यास कर सकता है। योग का परमलक्ष्य अन्तर्यामी श्रीकृष्ण का दर्शन करना है। इसलिए निस्सन्देह, कृष्णभावनाभावित भक्त सर्वोत्तम योगी है। ध्यान रहे, यहाँ प्रतिपादित योग के सिद्धान्त जनसाधारण में लोकप्रिय योगसंघों की पद्धति से भिन्न हैं।

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।।१५।।

युञ्जन्=अभ्यास करता हुआ; **एवम्**=इस प्रकार; **सदा**=निरन्तर; **आत्मानम्**=शरीर, मन एवं आत्मा को; **योगी**=योगाभ्यासी; **नियत मानसः**=जीते हुए मन वाला; **शान्तिम्**=शान्ति को; **निर्वाणपरमाम्**=भवरोग की समाप्तिरूप; **मत्संस्थाम्**=परव्योम में स्थित भगवद्धाम को; **अधिगच्छति**=प्राप्त होता है।

अनुवाद

इस प्रकार देह, मन और क्रियाओं के संयम का निरन्तर अभ्यास करने से योगी का भवरोग शान्त हो जाता है और वह मेरे धाम को प्राप्त होता है।।१५।।

तात्पर्य

यहाँ योग के अन्तिम लक्ष्य को स्पष्ट किया गया है। योगाभ्यास का प्रयोजन किसी भोगसुविधा की उपलब्धि कराना नहीं है; अपितु सम्पूर्ण भवरोग की निवृत्ति ही उसका लक्ष्य है। योगाभ्यास द्वारा स्वास्थ्य-सुधार अथवा लौकिक सिद्धि का अभिलाषी भगवद्गीता के मत में योगी नहीं है। साथ ही, भवरोग के शान्त होने का अर्थ कपोलकल्पित शून्य में प्रविष्ट होना भी नहीं है। भगवान् की सृष्टि में शून्य नाम की वस्तु कहीं नहीं है। भवरोग की निवृत्ति से तो परव्योम में स्थित भगवद्धाम में प्रवेश प्राप्त होता है। भगवद्धाम का भगवद्गीता में स्पष्ट वर्णन है: उस वैकुण्ठधाम में सूर्य, चन्द्रमा अथवा अग्नि की कोई आवश्यकता नहीं है। वहाँ के सब वैकुण्ठ नामक लोक प्राकृत आकाश के सूर्य के समान ही स्वयंप्रकाश हैं। भगवान् का राज्य सर्वव्यापक है; परन्तु परव्योम और उसमें स्थित वैकुण्ठ-लोकों को ही परमधाम कहा जाता है।

भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्व का मर्मज्ञ पूर्णयोगी, जिसे स्वयं श्रीभगवान् ने यहाँ **मच्चित्त, मत्पर, मत्स्थानम्** कहा है, सच्ची शान्तिलाभ कर अन्त में कृष्णलोक अथवा गोलोक वृन्दावन नामक उनके परम धाम में प्रवेश के योग्य हो जाता है। ब्रह्मसंहिता में स्पष्ट कहा है: **गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतः**, अर्थात् नित्य गोलोकविहारी श्रीभगवान् आपनी पराशक्ति के प्रताप से सर्वव्यापक ब्रह्म तथा एकदेशीय परमात्मा के रूप में भी लीलायमान हैं। श्रीकृष्ण और उनके अंश विष्णु के पूर्णज्ञान के बिना परव्योम अथवा नित्य भगवद्धाम वैकुण्ठ या